भारतीय दर्शन की विशेषताएँ

पूनम शुक्ला

भारतीय दार्शनिक सम्प्रदाय आस्तिक एवं नास्तिक के भेद से द्विधा विभक्त है। इनमें से आस्तिक दर्शन वेदों पर आस्था रखते हैं, जबकि नास्तिक वेदों की विरोधी विचारधारा के समर्थक है। आस्तिक दर्शनों में सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक मीमांसा एवं वेदान्त की गणना होती है तथा नास्तिक दर्शनों में चार्वाक, जैन तथा बौद्ध दर्शन परिगणित होते है। यद्यपि आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों के विचारों में अत्यधिक मतभेद है तथापि कतिपय ऐसे सिद्धान्त हैं, जिनमें दोनों ही वर्ग एक दूसरे के समर्थक रहे हैं। और विभिन्न दर्शनों की इस वैचारिक साम्यता का प्रधान कारण है कि उनका उद्‌भव एवं विभाग भारत–भूमि में हुआ है अतः भारतीय संस्कृति एवं उसके जीवन मूल्यों से वह अनुस्यूत रही है। इसमें मात्र चार्वाक दर्शन ही ऐसा है, जो पूर्णतः भौतिकवादी है तथा स्वार्थ सिद्धि को प्रेरित करने वाला एवं उग्र वेद विरोधी दर्शन है।